'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 24 | 4 मार्च, 2019 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

देवराज जी की 657वीं जयंती मनाई

'वंचित को गले लगाने वाला क्षत्रिय'

ठाकुर वह होता है जो सबका ध्यान रखे, क्षत्रिय वह होता है जो सबको साथ लेकर चले और यही हमारा ईश्वरीय भाव होता था। हमारे में शौर्य, तेज, धैर्य आदि गुण तो आज भी हैं लेकिन ईश्वरीय भाव क्षीण हो गया और इसीलिए हमने अपनों को अपना मानन छोड़ दिया। लोगों ने हमें लड़ाने का प्रयास किया और हम अपनों से ही लड़े व लड़ रहे हैं। जिन्होंने हमें सम्मान दिया, सेवा की उनको हमने अपना मानना छोड़ दिया। आज भी लोग हमें लड़ाने का प्रयास करते है, हमें सावधान रहना है।

हर वंचित को गले लगाना है क्योंकि वंचित को गले लगाने वाला ही क्षत्रिय कहलाता है। हमारी परम्पराएं संस्कारों से भरी हुई हैं उनका पालन करें। जिन संस्कारों को भूल गए हैं उनका सींचन करें, इससे ही क्षत्रियत्व आएगा। जो नाश से बचाता है वह क्षत्रिय होता है। हमारी श्रेष्ठ संस्कृति को बचाने के लिए प्रयत्नशील होना क्षत्रियत्व ही है। मध्यकाल में पश्चिम से चली आंधी पूरे विश्व को रौंदते हुए भारत में आकर रुकी। भारत ने उसे रोका तो सही लेकिन उनके साथ रहने के प्रभाव से अनेक विकृतियां पनपीं और उन्हीं विकृतियों के कारण हमारी तासीर बदलने लगी।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दलितआदिवासी संगठनों के साथ संवाद

16 फरवरी को संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में दलित एवं आदिवासी संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में हमारे समाज के कुछ लोगों की बैठक संपन्न हुई। विगत दिनों सदा से साथ रहने वाले समाजों के बीच विभिन्न कारणों से बढ़ रही दूरियों को पाटने के लिए किए गए इस प्रयास में भंवर मेघवंशी, डॉ. एम.एल. परिहार, हिन्दूसिंह सोढ़ा, सुरेन्द्रसिंह, कैलाश मीणा, हरीश धनदे, यशवर्धनसिंह झेरली, नारायण सिंह गोटन, श्रवणसिंह दासपां, श्रीपाल शक्तावत आदि ने अपने विचार रखे। वक्ताओं ने असहमति के मुद्दों को एक तरफ रखते हुए ऐसे मुद्दों पर काम करने की पहल करने की बात कही जो साझा हो।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'शिक्षा नेग'

आदरणीय बन्धुवर!

राजपूत समाज की प्रगति में शिक्षा के महत्त्व को मद्देनजर रखते हुए समाज के शादी-विवाह समारोह में 'शिक्षा नेग' की अनूठी एवं अभिनव परम्परा शुरू करने का निर्णय लिया गया है।

'शिक्षा नेग' (परम्परागत कर्मप्रवीण जातियों, मंदिरों एवं मठों के निमित्त नेग की ही तरह) एक नया नेग प्रस्तावित है। 'शिक्षा नेग' शादी में किए गए सारे खर्चे का आधा प्रतिशत होगा, अर्थात् एक लाख के खर्च पर 500 के हिसाब से कुल खर्च पर कितना नेग होगा यह आप स्वयं निश्चित करेंगे तथा यह राशि राजपूत शिक्षा कोष अथवा अपने क्षेत्र की स्थानीय राजपूत छात्रावास में जमा करवाने की कृपा करावें।

हमारा निवेदन रहेगा कि शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में इस अनूठे क्रांतिकारी कदम को आप अपना समर्थन एवं सम्बल प्रदान करें। इसका प्रचार-प्रसार कर शिक्षा दान के इस महायज्ञ में अपनी अधिक से अधिक महत्ती आहूति प्रदान करने की अनुकम्पा करें।

राजपूत शिक्षा कोष के खाते का विवरण

A/c Name : Rajput shiksha kosh (राजपूत शिक्षा कोष)
A/c No. 37561552700
SBI, Mandore Road Branch
IFSC Code : SBIN0031374

निवेदक
नारायण सिंह माणकलाव

शिक्षा कोष में दिए 2.01 लाख

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव द्वारा स्थापित राजपूत शिक्षा कोष हेतु जालोर में संघ के सहयोगी सुमेरसिंह धानपुर ने अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष में 2.01 लाख रुपए अर्पण किए। सुमेरसिंह के आग्रह पर नारायणसिंह माणकलाव व बिशनसिंह खिरजां जालोर पधारे और माननीय संघ प्रमुख श्री के जालोर प्रवास के दौरान उनके सानिध्य में यह सहयोग ग्रहण किया। सभी ने राजपूत शिक्षा कोष द्वारा दी गई 'शिक्षा नेग' की अवधारणा के तहत इस भेंट को प्रेरणादायी बताया।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

मां बालक की निर्मात्री होती है। वह जैविक रूप से ही उसकी निर्मात्री नहीं होती बल्कि उसके मानसिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक गठन की भी प्रथम आधार होती है। इसीलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है 'माता निर्माता भवति।' पूज्य तनसिंह जी की माताजी के लिए यह उक्ति शत प्रतिशत सही है। शैशवास्था में ही पिताजी के देहावसान के बाद माताजी ने ही उनके माता एवं पिता का दायित्व निर्वहन किया। अपनी सम्पूर्ण कोमलता को बनाए रखते हुए एक पिता की सी दृढ़ता से उनके जीवन को गढ़ा। ऐसी अनेक घटनाएं हैं जो उनकी माताजी के इस अतुलननीय योगदान को पुष्ट करती हैं। उनके बचपन की एक ऐसी घटना है। उनके पिताजी बलवंतसिंह जी ने दो विवाह किए थे। तनसिंह जी की माताजी मोती कंवर जी से उनका विवाह उनकी पहली पत्नी के देहात के लंबे समय बाद अधेड़ावस्था में हुआ था। पहली पत्नी की संतानों एवं तनसिंह जी की उम्र में बहुत अंतर था। पिताजी के देहांत के बाद कृषि योग्य जमीन आदि संपत्ति के बंटवारे के बाद माता मोती कंवर जी से पूज्य तनसिंह जी ने एक बार पूछ लिया कि यह बंटवारा आदि किस प्रकार हुआ है। माताजी ने पूज्य श्री को डांटते हुए कहा कि आज तो पूछ लिया है, आगे से कभी इस बारे में कुछ मत पूछना। हमें जो मिला, जितना मिला, जैसे मिला वह ही हमारा है। इसी से हमें हमारा काम चलाना है। पूज्य तनसिंह जी ने उस दिन के बाद घरेलू संपत्ति के बारे में कभी चिंतन नहीं किया। जो मिला उससे काम चलाया और आवश्यकता हुई तो स्वयं कमाया। परिणाम स्वरूप अग्रज भाइयों एवं उनके परिवार से सदैव उनके मधुर संबंध बने रहे। जरा विचार करें संपत्ति के बंटवारे को लेकर समाज में होने वाले नित्य के विवाद का माताजी ने कितना सरल उपाय बताया, यदि समाज इस उपाय को अपना ले तो कितने व्यर्थ के विवाद शांत हो जाएंगे। लेकिन इसके लिए बचपन में ही पूज्य मांसा की सीख एवं माताजी की सीख को ब्रह्म वाक्य मानकर जीवन भर मानने वाले पूज्य तनसिंह जी जैसे पुत्र का होना आवश्यक है। माता को परमेश्वरी मानने के लिए शास्त्रों में वर्णन भरे पड़े हैं लेकिन उस वर्णन का व्यवहारिक रूप देखना हो तो हमें पूज्य तनसिंह जी का जीवन देखना चाहिए जिन्होंने जीवन पर्यन्त माताजी की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर उसका ईश्वरीय आदेश की तरह पालन किया।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... **- अभयसिंह रोडला**

इस अंक में हम वाणिज्य वर्ग के छात्रों हेतु उपलब्ध कुछ महत्त्वपूर्ण सर्टिफिकेशन कोर्सेज की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे।

(1) सी.ए. (चार्टर्ड अकाउंटेन्ट Charttered Accountant) : यह वाणिज्य वर्ग के छात्रों में सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित कैरियर विकल्प है। चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट ICAI (इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेन्ट्स ऑफ इण्डिया) के सदस्य होते हैं। चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट बनने के बाद बड़ी कंपनियों अथवा फर्म के लेखा विभाग का हिस्सा बनने अथवा निजी प्रैक्टिस करने का विकल्प उपलब्ध रहता है। सी.ए. कोर्स के चार भाग होते हैं :

(i) CPT (Common Proficiency Test) यह CA कोर्स हेतु प्रारम्भिक प्रवेश परीक्षा है, जिसके लिए परीक्षा से न्यूनतम दो माह पूर्व ICAI के साथ रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है। इस परीक्षा हेतु न्यूनतम योग्यता 12वीं कक्षा उत्तीर्ण है। यद्यपि रजिस्ट्रेशन 10वीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् किया जा सकता है। कॉमर्स के छात्रों हेतु 12वीं में 50 प्रतिशत जबिक अन्य विषय वर्ग के छात्रों हेतु 55 प्रतिशत व गणित के छात्रों हेतु 60 प्रतिशत अंक न्यूनतम हैं।

(ii) IPCC (Integrated Professional Competence Course) : 12वीं कक्षा तथा CPT परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही IPCC हेतु रजिस्टर किया जा सकता है। IPCC परीक्षा से 9 माह पूर्व रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य है। IPCC के दो स्तर हैं - Group-I तथा Group II/ Group I के अन्तर्गत चार प्रश्न पत्र होते हैं जबकि Grupu II के अन्तर्गत तीन प्रश्न पत्र होते हैं।

(iii) आर्टिकलशिप (Articleship) : IPCC की ग्रुप-I परीक्षा को उत्तीर्ण करने के पश्चात् आर्टिकलशिप हेतु रजिस्टर किया जा सकता है तथा ग्रुप-II परीक्षा को आर्टिकलशिप के दौरान भी उत्तीर्ण किया जा सकता है। आर्टिकलशिप के अन्तर्गत अभ्यर्थी को एक चार्टर्ड अकाउंटेंट के साथ तीन वर्ष तक प्रशिक्षु सहायक के रूप में कार्य करना होता है।

(iv) सी.ए. फाइनल कोर्स : आर्टिकलशिप के दौरान IPCC की दोनों Group परीक्षा पास करने के पश्चात सी.ए. फाइनल कोर्स के लिए रजिस्टर किया जा सकता है। आर्टिकलशिप के अन्तिम छह माह में इस परीक्षा को पास करना होता है। इसमें भी Group-I तथा Group-II यह दो स्तर होते हैं।

सी.ए. कोर्स के दौरान ऑरिएन्टेशन एण्ड इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी ट्रेनिंग (ITT) तथा जनरल मैनेजमेंट एण्ड कम्युनिकेशन स्किल्स (GMCS) कोर्स को भी पूरा करना अनिवार्य है।

क्रमशः

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

रसिया बालम, कंवारी कन्या

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

अर्बुदांचल अथवा आबूपर्वत अति प्राचीन धार्मिक स्थल रहा है। यह अरावली पर्वतमाला पर स्थित है जिसे दुनियां की प्राचीनतम पर्वतमाला माना गया है। आबू की सबसे ऊंची चोटी गुरु शिखर (1722 मीटर समुद्र तल से) मध्य भारत की सबसे ऊंची चोटी है। आबूपर्वत पर अनेकों ऋषि मुनियों ने तपस्या की है। जिनमें से दत्तात्रेय, वशिष्ठ, विश्वामित्र, कपिल, भृगु, गौतम आदि ऋषियों के प्राचीन आश्रम यहां पर हैं। आबू के इर्द-गिर्द कई सभ्याताएं एवं शासन व्यवस्थाएं पनपीं एवं मिट गईं। क्षत्रियों में अग्निवंश की अवधारणा की उत्पत्ति यहां से मानी गई है। राजपूतों में परमारों, सौलंकियों, चौहानों एवं शिशोदियों इत्यादि ने यहां शासन किया। आजादी तक यह सिरोही रियासत के देवड़ा चौहान शासकों के अधीन रहा। अंग्रेज शासन में आबू राजपूताना की ग्रीष्मकालीन राजधानी रहा।

आबू क्षेत्र में एक लोककथा प्रचलित है जिसका यहां के सांस्कृतिक जीवन में अभी भी महत्त्व समझा जाता है। यह कथा अति प्राचीन काल से चलती आ रही है जिसको ऐतिहासिक प्रमाणिक तर्कों से समझा नहीं जा सकता परन्तु यह जन मान्यता का हिस्सा अवश्य है। सैंकड़ों वर्ष पहले आबू में रसिया बालम एवं कंवारी कन्या की अधूरी प्रेम कहानी यहां की वादियों में रोमांस भरती आ रही है। कहते हैं कि पिछले जन्म में एक तरुण जोड़े का प्रेम प्रणय अधूरा रह गया। इस जन्म में लड़का कहीं अन्यत्र जन्म लेकर संसार की थाह पाने के लिए आबू की कंदराओं में आकर तपस्या करने लगा। लड़की ने आबू के राजा के घर जन्म लिया। एक बार यहां की सुरम्य वादियों में दोनों का आमना-सामना हुआ और उनका पिछला प्रेम जाग गया। दोनों एक-दूसरे से विवाह करने को राजी थे परन्तु राजा व रानी इसे बैमेल जोड़ा समझ विवाह से इनकार करने लगे। अन्त में बेटी की जिद्द से पार पाने के लिए राजा ने साधू से यह शर्त रखी की एक ही रात में बिना किसी औजार के इस पहाड़ पर एक सुन्दर झील खोदे। जब तक मुर्गा बांग नहीं देवें। कहते है प्रेम की उत्कंठा से भरपूर साधू ने एक ही रात में अपने नाखूनों से एक तालाब खोद डाला। जब रानी को यह पता चला कि साधू अपने मकसद में सफल होने वाला है तो उसने सुबह होने से पहले मुर्गे की बांग की आवाज निकाली। साधू समझा कि वह शर्त हार गया है। वह बड़ा विचलित हो गया। परन्तु सुबह जब साधु को उसके साथ हुए षड्यंत्र का पता चला तो उसने रानी को शाप दिया एवं खुद व राजकुमारी पत्थर की मूर्तियां बन गए। उनके मंदिर वर्तमान में देलवाड़ जैन मंदिरों के पीछे की तरफ स्थित हैं। प्रेमी जोड़े अपनी मनोकामनाएं पूरी करने एवं महिलाएं अमर सुहाग का आशीर्वाद लेने इस मंदिर में आते हैं। नव दम्पति यहां जात लगाने आते हैं। रसिया बालम एवं कंवारी कन्या के प्रेम कहानी के लोक गीत यहां के क्षेत्र में आज भी गाये जाते हैं। यहां मेला भी भरता है जिसमें लोग दूर-दूर से उपस्थित होते हैं। रसिया बालम व कंवारी कन्या के मंदिर में आने वाले लोग एक पत्थरों के बड़े ढेर पर पत्थर मारते हैं यह ढेरी रानी की याद दिलाती है जिसने इस जोड़े के साथ धोखा किया था। जोड़े की मूर्तियों को श्रद्धालु शिव एवं पार्वती के रूप में मान्यता देते हैं। सिरोही के पूर्व महाराजा एवं इतिहासकार पद्मश्री रघुवीरसिंह देवड़ा के अनुसार यह मंदिर पांच हजार वर्ष से प्राचीन है इसका जीर्णोद्धार मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने अचलगढ़ (आबू) में अपने राज्यकाल 1453 से 1468 के मध्य कराया था। साधु रसिया बालम ने एक ही रात में अपने नाखुनों से झील को खोदा था। यह आबू की प्रसिद्ध झील नाखूनों से खोदी जाने के कारण नक्खी झील कहलाती है। इस झील को यहां पवित्र झील माना जाता है, लोग विभिन्न अवसरों पर इसकी पूजा करते हैं, स्नान करते हैं तथा पूर्वजों की अस्थियां प्रवाहित करते हैं।

राजपूत समाज बरसिंहपुरा द्वारा स्वेटर वितरण

सीकर जिले के बरसिंहपुरा गांव में 16 फरवरी को गांव के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को स्थानीय राजपूत समाज द्वारा स्वेटर वितरित किए गए। इस अवसर पर महाराव शेखा ग्रामीण विकास समिति बरसिंहपुरा के अध्यक्ष गोविंदसिंह तंवर, लढ़ाणा ग्राम सहकारी समिति अध्यक्ष मूलसिंह शेखावत सहित कई गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे।

संघ प्रमुख श्री का बीकानेर, जोधपुर व जालोर प्रवास

प्रातःकालीन शाखा (बीकानेर)

सहयोगी मिलन (बीकानेर)

माननीय संघ प्रमुख श्री अपने प्रवास कार्यक्रम के तहत 15 फरवरी की रात बाड़मेर से रवाना होकर जयपुर पहुंचे। जयपुर में 16 फरवरी को दलित एवं आदिवासी संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर रात को बीकानेर के लिए रवाना हो गए। 17 व 18 को बीकानेर, 19 को जयपुर, 20 से 23 फरवरी जोधपुर एवं 24 फरवरी को जालोर प्रवास पर रहे।

17 को प्रातः बीकानेर पहुंचने के बाद प्रातः 8 से 9 बजे तक संभागीय कार्यालय 'नारायण निकेतन' में लगने वाली शाखा में शामिल हुए। शाखा में नियमित रूप से पूज्य तनसिंह जी की पुस्तक 'समाज चरित्र' पर होने वाली चर्चा में विषय को समझाया। शाखा के उपरान्त बीकानेर के विभिन्न प्रांतों में संघ कार्य की प्रांतवार समीक्षा की। प्रांत प्रमुखों एवं संभाग प्रमुख ने इस सत्र में अब तक हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी एवं आगामी कार्ययोजना के बारे में बताया। इस बैठक में संभाग के सभी दायित्वाधीन स्वयंसेवक शामिल हुए। 11 बजे के उपरान्त वरिष्ठ स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा के आवास पर उनकी माताजी के शतायु होने के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। यहां अनेक वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध समाज बंधुओं से भेंट हुई। भोजनोपरांत पुनः संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन पधारे जहां जोधपुर से पधारे वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव आदि उपस्थित स्वयंसेवकों के साथ संस्मरण साझा किए। अपरान्ह तीन बजे स्वयंसेवकों के परिवारों एवं शाखा में आने वाली बालिकाओं और महिलाओं के साथ चर्चा की। महिला शाखा के उपरांत 4 से 6 तक बीकानेर में संघ के सहयोगी समाज बंधुओं के साथ चर्चा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में शहर के अनेक वरिष्ठ एवं युवा समाजसेवी व सहयोगी उपस्थित हुए। कार्यक्रम में संघ कार्य एवं समाज के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई। 18 फरवरी को प्रातः 11 बजे बीकानेर जिले की डूंगरगढ़ तहसील के पुंदलसर गांव में आयोजित संघ के स्नेहमिलन में शामिल हुए। इस स्नेहमिलन में पुंदलसर के अतिरिक्त आसपास के दर्जनभर गांवों के लोग शामिल हुए। यहां संघ प्रमुख श्री ने उपस्थित समाज बंधुओं से कहा कि समाज का मतलब केवल राजपूत जाति ही नहीं है बल्कि सभी जातियों से मिलकर समाज का निर्माण होता है। कोई अन्य रखे या नहीं लेकिन ऐसी उदार एवं बड़ी सोच को रखना हमारा दायित्व है और तद्नुसार ही हमारा आचरण होना चाहिए। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि वर्तमान अराजकता का कारण क्षत्रिय समाज का सोया हुआ होना है। जब तक क्षत्रिय नहीं जागेगा तब तक यह आराजकता का माहौल बना रहेगा इसलिए संसार में व्यवस्था कायम करने के लिए क्षत्रिय का जागना आवश्यक है। क्षत्रिय को अपने क्षत्रियत्व पर आरूढ़ होकर समाज में बढ़ रहे भेदभाव को खत्म करना होगा एवं सामंजस्य स्थापित करना पड़ेगा। माननीय संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन से पूर्व वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली को समझाया एवं बालकों व बालिकाओं को संघ की शाखाओं, शिविरों में भेजने का आग्रह किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में राजेन्द्रसिंह आलसर के निर्देशन में यज्ञ करवाया गया।

18 फरवरी को पुंदलसर से लौटने के बाद उच्च प्रशिक्षण शिविर के योग्य उभरते स्वयंसेवकों से मिलन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें परिचय के बाद संघ से जुड़ने में होने वाली दिक्कतों के विषयों में चर्चा की गई। उपस्थित स्वयंसेवकों ने अपनी बात कही एवं माननीय संघ प्रमुख श्री ने विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों के माध्यम से स्वयंसेवकों की शंका का समाधान किया। 18 की रात को ट्रेन से बीकानेर से जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

स्नेहमिलन जोधपुर

संघ प्रमुख श्री जोधपुर प्रवास के दौरान 23 फरवरी को जोधपुर संभाग के संघ कार्यालय 'तनायन' में स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन प्रातः 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक रखा गया। इसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक राजसिंह आमला, शंकरसिंह महरोली, नारायणसिंह माणकलाव सहित युवा, प्रोढ़ व वृद्ध स्वयंसेवक माननीय संघ प्रमुख श्री का सानिध्य लेने पहुंचे। उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ जैसी पवित्र संस्था से जुड़े होने के बावजूद भी हमारे में कुछ अपवित्रता आ जाती है। काम करते-करते अहंकार आ जाता है। श्रेष्ठता का भान हो जाता है लेकिन संघ के पवित्र वातावरण में आने से पवित्रता आती हैं। जिस प्रकार मंदिर, आश्रम में जाने से पवित्रता आती है। संघ पवित्र है इसमें अनेक पवित्र लोग आते हैं, इन सबके बीच आने से हमारी अपवित्रता दूर होती है। संसार बदल रहा है। संघ के प्रारम्भ के लोगों के समय जो समस्याएं थीं वो आज नहीं है। उन समस्याओं से जूझने वाले पुराने लोग संघ की नींव हैं। नींव बाहर दिखाई नहीं देती लेकिन आधार होती है। आज के लोगों के सामने नई प्रकार की समस्याएं है। पुराने समय में आजीविका जुटाना बड़ी समस्या नहीं थी और आज यह मुख्य समस्या बन गई है। लेकिन संघ ऐसी किसी समस्या से निराश नहीं है बल्कि इन विपरीत परिस्थितियों में भी लोग काम कर रहे हैं इससे आशान्वित है। इसे प्रेरणादायी मानता है। आज बाहर का इतना प्रभाव है कि किसी एक मार्ग से ही काम नहीं किया जा सकता, इसलिए संघ में नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। नए फ्रंट खुल रहे हैं। समाज के सभी लोगों की प्रतिभा का समाज के लिए उपयोग है। सभी की उपयोगिता समाज के लिए हो, इसके लिए संघ काम कर रहा है। राजपूत के लिए 'माचे की मौत' (निष्क्रिय मृत्यु) अच्छी नहीं मानी जाती इसलिए जो जहां है, जैसा है, समाज के लिए उपयोगी बने, यह संघ का प्रयास है। अपनी शक्तियों को प्रकट करें और साथ में अपनी कमजोरियों को भी प्रकट करें जिससे लोगों को प्रेरणा मिले कि इतनी कमजोरियों के बावजूद भी आप क्रियाशील हैं। क्षात्र प्रवृत्ति के बिना किसी का कल्याण संभव नहीं है। संघ के हर स्वयंसेवक के लिए समाज व संघ को यह अहसास होना चाहिए कि वह उसके लिए कुछ कर रहा है। यह अहसास कैसे हो यह उस स्वयंसेवक को देखना है। इस स्नेहमिलन में संभाग के विभिन्न प्रांतों में विगत 2 माह के कार्य की समीक्षा की गई। उ.प्र.शि. के योग्य स्वयंसेवकों को लेकर भी चर्चा की गई। नारायणसिंह माणकलाव ने राजपूत शिक्षा कोष की जानकारी दी। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

स्नेहमिलन (पुंदलसर)

स्नेहमिलन (जोधपुर)

संपादकीय

व्यवस्था, व्यक्ति और विकृति

इस संसार में समय-समय पर जीवन व्यवहार, शासन प्रशासन आदि की एक से एक बढ़कर व्यवस्थाएं पनपीं। कुछ समय बाद उस व्यवस्था के दोष नजर आने लगे एवं व्यवस्था परिवर्तन की मांग उठने लगी। इस प्रकार समय-समय पर इस संसार में व्यवस्थाएं पनपती रहीं, व्यवस्थाओं के खिलाफ क्रांतियां होती रहीं और नई व्यवस्थाएं बनकर फिर बिगड़ती रहीं। कोई भी व्यवस्था आज तक कोई स्थायी समाधान उपलब्ध नहीं करा पाई। कोई भी क्रांति कोई स्थायी व्यवस्था नहीं पनपा पाई। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने लिखा 'क्रांति का बजरा चला सवेरे धूप ढली घिर आए अंधेरे।' जिन अंधेरों के विरुद्ध उजाला लाने को क्रांतियां पनपीं कालांतर में उनकी धूप ढलती गई एवं वे अंधेरों में तब्दील होती गईं। इस प्रकार देखा जाए तो हर प्रकार का व्यवस्था परिवर्तन कालांतर में एक नए व्यवस्था परिवर्तन की नींव रख देता है। इस प्रकार क्रांति दर क्रांति होती जा रही है। व्यवस्था दर व्यवस्था बदलती जा रही है लेकिन कोई स्थाई समाधान नहीं निकल सका। लेकिन विडंबना का विषय यह है कि किसी भी क्रांतिकारी ने रुककर ठहरकर कभी यह नहीं सोचा कि क्या व्यवस्था परिवर्तन कोई स्थाई उपाय है। व्यक्ति जब तक अपने आपको जन्म और मृत्यु के बीच की यात्रा तक ही अपने अस्तित्व को मानता है तब तक वह कोई स्थाई समाधान सोच भी नहीं सकता क्योंकि व्यवस्था का जीवन सदैव व्यक्ति के जीवन से लंबा होता है इसलिए क्रांतिकारी की नजर या बदलाव के नायक की नजर उसके अपने जीवन के पार नहीं जा पाती। लेकिन हमारे लिए विचारणीय विषय यह है कि क्या कोई व्यवस्था अपने आप में पूर्ण हो सकती है? एक व्यवस्था को बदल कर नई व्यवस्था पनपाने से क्या वह फुल प्रूफ हो जाएगी?

गहराई से देखें तो व्यवस्था अपने आप में कोई उपाय नहीं है। विकृति व्यवस्था में नहीं बल्कि व्यक्ति के मन में होती है। पूज्य तनसिंह की पुस्तक 'साधक की समस्याएं' के अनुसार विज्ञान ने जिस प्रकार उन्नति की उससे बाहर की दुनियां में आशातीत उन्नति हो गई, विज्ञान ने मनुष्य की आशातीत सेवा की लेकिन दुर्भाग्य से बाहर जितनी उन्नति हुई, अंतर उतना ही उपेक्षित होता गया। क्रांतिकारी बाहर विकृतियां ढूंढ़ते रहे और अंतर की विकृतियों फलित होती गईं। हमारे भारत वर्ष में लंबे समय तक एक ही व्यवस्था कायम रही। यदि किसी व्यक्ति की विकृतियां के कारण व्यवस्था में विकृति आई तो व्यवस्था को बदलने की मांग नहीं उठी बल्कि आवश्यक होने पर व्यक्ति को ही बदल दिया गया। परिणाम स्वरूप व्यवस्था की विकृतियों का शमन होता रहा। भारत वर्ष में विकृत व्यक्तियों के शमन के लिए महाभारत जैसे नरसंहार से भी परहेज नहीं किया गया लेकिन व्यवस्था को बदलने की बातें फिर भी नहीं हुई। आवश्यकता व्यवस्था को बदलने की नहीं बल्कि धृतराष्ट्र की जगह युधिष्ठर को बिठाने की थी और वही किया गया। पूरे भारत का प्राचीन इतिहास उठाकर देखें सदैव व्यवस्था की जगह विकृत व्यक्ति को ही बदला गया। लेकिन पश्चिम के नव जागरण ने व्यवस्था बदलने की बातें की। उससे पहले मध्य एशिया से उठे चक्रवात ने भी व्यवस्थाएं ही बदली और परिणाम स्वरूप अच्छा बूरा सब स्वाहा होता गया। सदियों के अनुभव से जो व्यवस्थाएं पनपी थी वे स्वाहा होती गईं और उनकी जगह नई नवेली एवं अपरिष्कृत व्यवस्थाएं पनपने लगीं जिसका परिणाम हमारे सामने है। संसार में आमूल चूल परिवर्तन का नारा देने वाली क्रांतियों की भी क्रांति हो गई। लेकिन पश्चिम से उठे इस नव जागरण ने हमारे राष्ट्र को भी इतना प्रभावित किया कि हम आज भी व्यवस्था परिवर्तन की ही बात करते हैं। विकृत लोग अपनी विकृति को मिटाए बिना व्यवस्था की विकृतियां मिटाने के लिए उसे बदलने की बात करते हैं। सदियों से स्थापित परंपराओं का विरोध करने वालों को नायक माना जाता है। तथाकथित विचारक ऐसे लोगों को सर्वाधिक पसंद करते हैं जिन्होंने किन्हीं स्थापित एवं परिष्कृत मान्यताओं को अपने व्यक्तिगत अहंकार के वशीभूत हो तोड़ने का नारा दिया हो। लेकिन यदि हम वास्तव में व्यवस्था में पनपी खामियों को लेकर, विकृतियों को लेकर इतने ही अधिक विचलित हैं तो व्यवस्था नहीं व्यक्ति बदलें। व्यक्ति का अंतर जो उपेक्षित बड़ा है उधर झांकना प्रारम्भ करें क्योंकि विकृत व्यक्ति को बदल कर विकृत व्यक्ति को ही बिठाने से कुछ भी घटित नहीं होने वाला। इसलिए दुर्योधन और धृतराष्ट्र को बदलने के लिए युधिष्ठर का होना आवश्यक है। रावण को हटाकर कुंभकर्ण या मेघनाद को लंकापति बनाने से कुछ नहीं होने वाला बल्कि उसके लिए भी विभीषण का होना आवश्यक है।

ऐसे में क्या हम किसी युधिष्ठर के जन्म लेने का इंतजार करें? क्या किसी विभीषण के पनपने तक कुछ न करें? जिंदा लोग इंतजार नहीं किया करते बल्कि स्वयं से जो बन पड़े वह करना प्रारम्भ कर देते हैं. यदि युधिष्ठर नहीं है तो युधिष्ठर बनना प्रारम्भ कर देते हैं। पूज्य तनसिंह जी ऐसे ही पुरुषार्थी व्यक्ति थे। उन्होंने केवल यह बता कर संतोष नहीं किया कि जीवन बदलना ही क्रांति है बल्कि जीवन को बदलना प्रारम्भ कर दिया। जीवन बदलने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। व्यवस्था की विकृति से पहले व्यक्ति की विकृति को मिटाने का मार्ग प्रदान किया। उपेक्षित अंतर की ओर झांकने का मार्ग प्रदान किया। उस मार्ग पर चले ही नहीं बल्कि अनेक लोगों को चलना सिखा दिया और वह मार्ग अनवरत रूप से अपने आंचल में आने वाले लोगों का जीवन बदल रहा है।

खरी-खरी

देश भक्ति का ज्वार भाटा

सोशल मीडिया की अनेक बुराइयां और अच्छाइयां है। उनमें से एक इन दिनों प्रकट हुई। पुलवामा आत्मघाती हमले के तुरन्त पश्चात् देशभक्ति का ज्वार उफनने लगा। पढ़कर, देखकर अच्छा लग रहा था कि देश के लोग देश के सैनिकों के प्रति कितने अधिक संवेदनशील हैं। जिस राष्ट्र में सेना के प्रति इतना सम्मान हो उस राष्ट्र के लिए सैनिक होना गर्व की बात है और यही गर्व और प्यार तो एक सैनिक को अपने राष्ट्र के लिए कुर्बान होने की प्रेरणा देता है। चारों ओर बदला लेने की बातें हो रही थीं। ऐसा लग रहा था कि जैसे जल्द ही कुछ गठित होने वाला है। हर दिन सोशल मीडिया में मैसेज वायरल हो रहे थे कि आज कुछ बड़ा होने वाला है। चारों और युद्धान्माद की सी स्थिति हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे हर भारतवासी अपने सैनिकों की कायराना हत्या का बदला लेने के लिए युद्ध का प्यासा सा हो रहा है। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उसी सोशल मीडिया पर उन्हीं लोगों के संदेश वायरल होने लगे कि पाकिस्तान में भिंडी 300 रुपए किलो बिक रही है, देख लो चखा दिया ना मजा। तब लगा कि बस हमारा बदला इतना ही था कि उनकी भिंडी, टमाटर और प्याज महंगे हो जाएं। इतनी अल्पजीवी थी हमारी देश भक्ति। लेकिन गंभीरता से सोचें तो पाएंगे कि ऐसी देशभक्ति इतनी ही अल्पजीवी हुआ करती है। यह देशभक्ति नहीं बल्कि देशभक्ति का ज्वार था और ज्वार का भाटा भी जल्दी ही आता है। समुद्र का पानी चंद्रमा के आकर्षण के कारण जिस गति से भूमि की ओर बढ़ता है उससे भी तीव्र गति से वापिस समुद्र की ओर चला भी जाता है।

देशभक्ति का यह ज्वार और भाटा देश का कुछ भला नहीं करता बल्कि जिन लोगों को इस ज्वार और भाटे का लाभ लेना होता है वे ले लेते हैं और आमजन अंत में अपने आपको ठगा सा महसूस करता है। आज के विश्व में दो देशों के संबंध इतने अपरिपक्व नहीं है कि वे तुरन्त युद्ध में बदल जावें। युद्ध प्रारम्भ करना हमें जितना आसान लगता है समाप्त करना उतना ही कठिन होता है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि हमारे सैनिकों की कायराना हत्या का बदला नहीं लिया जावे। अवश्य ही लिया जाना चाहिए लेकिन जिस रूप में हम बदला चाहते हैं उस रूप में बदला सेना ही ले सकती है और जो काम सेना को करना है उसे सेना ही जानती है कि कैसे, कब और कहां करना है और सेना ने ऐसा किया भी। प्रचार माध्यमों से जानकारी मिली है कि देश के राजनीतिक नेतृत्व ने सेना को इसकी छूट दे रखी है तो हमें सेना को सुझाव या निर्देश देने की अपेक्षा साथ देना चाहिए। हम जो कर सकते हैं हमें उसकी ही बात करनी चाहिए और उसका ही प्रचार भी करना चाहिए और हम ऐसा नहीं करते हैं इसीलिए हमारी देशभक्ति के ज्वार का भाटा आ जाता है। हम देश के सैनिकों का सम्मान कर सकते हैं जो कि आजादी के बाद से हमने लगभग करना छोड़ दिया। हमने उन्हें कर्मचारी मान लिया और इस बात को भूला दिया कि कोई आजीविका के लिए जान देने को तैयार नहीं होता। इसके लिए हम ही नहीं बल्कि आजादी के बाद पनपा राजनीतिक नेतृत्व भी जिम्मेदार है जिसने इस राष्ट्र पर जान न्यौछावर करने वाले पूर्व नायकों के प्रति उपेक्षा बरती क्योंकि उन्हें उन नायकों की जगह स्वयं को स्थापित करना था। वह प्रवृत्ति आज भी जारी है इसलिए तो विभिन्न राजनीतिक दलों की आई.टी. सेल इस कायरना हरकत में भी अपने नेताओं को नायक बनाने में संलग्न है। जिस घटना पर शर्म आनी चाहिए, क्रोध आना चाहिए, क्षोभ होना चाहिए, पीड़ा होनी चाहिए उस घटना पर जनता में युद्धोन्माद भड़का कर जनता की भावना को अपनी ओर मोड़ने वाले लोग क्या देशभक्त हैं और उनसे टक्कर लेने के लिए बेहुदा बयान देने वाले हमारे राजनेता क्या हमारी दया के पात्र नहीं हैं। लेकिन उनसे पहले तो दया के पात्र हम है जो उनको अपना नेता मानते हैं। जब तक हमारी यही स्थिति रहेगी तब तक देशभक्ति जैसी उदात्त भावनाएं यूं ही ज्वार भाटा बनती रहेंगी।

संघ प्रमुख श्री का बीकानेर, जोधपुर व जालोर प्रवास (पृष्ठ तीन से लगातार...)

सहयोगी मिलन जोधपुर

सत्संग का अर्थ होता है सत्य का संग। सत्य हमारे अंदर व्याप्त है इसलिए बाहर कोई सत्संग नहीं है बल्कि अपने आपका संग करना ही सत्संग है। संघ सामूहिक रूप से ऐसा प्रयास करवाता है इसलिए संघ अपने आप को देखने का सामूहिक सत्संग है। आप्त पुरुष उसे कहते हैं जिसने अपने आपको प्राप्त कर लिया है और जिसने अपने आपको प्राप्त कर लिया है वह परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है। संघ उस ओर बढ़ने का मार्ग है। जोधपुर स्थित संभागीय कार्यालय 'तनायन' में 23 फरवरी को सायं आयोजित सहयोगी मिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि जब तक क्षात्र भावना का विकास नहीं होगा तब तक संसार का कल्याण संभव नहीं है और हमारे रक्त की तासीर में क्षात्र भावना समाहित है, उसकी तासीर कहीं गई नहीं है। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी को जागृत करने का प्रयत्न कर रहा है। संघ क्षात्र भाव को प्राप्त करने, प्रकट करने और उसके लिए लोगों को साथ लाने का काम है। संघ किसी भी प्रकार के संग्रह का मार्ग नहीं है। संघ का काम कदमताल नहीं बल्कि गति है इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने आह्वान किया 'चल पड़े पांव जिस ओर पथिक, फिर रुक रुक कर चलना कैसा।' ऐसा काम करने के लिए पागलपन की आवश्यकता होती है। पागल वह होता है जो दुनिया की परवाह नहीं करता। बुद्ध, महावीर, विवेकानंद में ऐसा ही पागलपन था इसलिए वे संसार की परवाह किए बिना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ पाए। प्रायः संसार ऐसे लोगों को प्रारम्भ में सिरफिरे कहता है। वास्तव में उनका सिर फिर जाता है। संसार का सिर (मुख) जिस ओर होता है वे उससे विमुख हो जाते हैं। गीता के अनुसार संसार के लिए जो दिन होता है, संयमी पुरुष के लिए वह रात्रि होती है। संयमी पुरुष ही अपने जीवन लक्ष्य को हासिल कर पाते है। संघ की साधना संयम की ही साधना है। आज स्वराज आ गया लेकिन सुराज नहीं आ पाया क्योंकि संयम की साधना, क्षात्र भाव की साधना का अभाव है। संघ पूज्य तनसिंह जी की इसी पीड़ा का प्रकट स्वरूप है और आप सबके सहयोग से उनके बताए मार्ग पर अग्रसर है।

स्नेहमिलन जालोर

अपने प्रवास कार्यक्रम के तहत 24 फरवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री जालोर पहुंचे। जालोर प्रांत प्रमुख गणपतसिंह भंवराणी के आवास पर पूरे संभाग के स्वयंसेवक माननीय संघ प्रमुख श्री का सानिध्य लेने पहुंचे। उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आप लोग काम कर रहे हैं यह जानकर प्रसन्नता होती है लेकिन आप सब लोगों से मिलने का चाह रहती है इसलिए मिलने चला आता हूं। काम करते हुए सदैव यह समझ रखें कि संघ के काम को जिसने अपना माना है वही इस काम को कर पाएगा। संसार के अन्य लोगों को इससे कोई लेना-देना नहीं है। आप यदि अपना समझते हैं तो करते रहें। आप में से अधिकांश लोग मिलते रहते हैं, कुछ लोग परिस्थितिवश कहीं उलझ जाते हैं। उन्हें भी किसी न किसी रूप में अपना जुड़ाव बनाए रखना चाहिए। संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने विगत संभागीय स्नेहमिलन में लिए लक्ष्यों की जानकारी दी एवं उसके बाद हुई प्रगति से अवगत करवाया। प्रांत वार लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किए गए प्रयासों की समीक्षा की गई। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने संभाग द्वारा लिए गए 100 शाखाओं के लक्ष्य की प्रगति की समीक्षा की। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि अभी परीक्षाओं का समय आ गया है इसलिए नियमित शाखाओं में कुछ कठिनाई हो सकती है लेकिन इस अवधि के दौरान कम से कम शाखाओं का बीजारोपण तो हो ही जाना चाहिए। स्नेलमिलन के उपरांत जिला प्रमुख बन्नेसिंह गोहिल, जिला पुलिस अधीक्षक केशरसिंह शेखावत, उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्रसिंह सिसोदिया, आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित, जिला परिषद सदस्य प्रदीपसिंह सियाणा, समाजसेवी मदनराज बोहरा आदि संघ प्रमुख श्री से मिलने पहुंचे एवं विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक चर्चाएं की।

मिलन व चर्चा

गुजरात के वरिष्ठ राजपूत नेता शंकरसिंह बाघेला जोधपुर में एक विवाह समारोह के दौरान माननीय संघ प्रमुख श्री से चर्चा करते हुए।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

परमवीर डिफेन्स एकेडमी
सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान
आर्मी नेवी एयरफोर्स SSC-GD NDA/CDS
भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा
जोधपुर 9166119493

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान
रजि. केन्द्र
मुख्य केन्द्र
अब आपकी सेवा में
आंखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
• कैटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी • कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
• रेटिना • कॉर्निया
• ग्लूकोमा • अल्प दृष्टि उपकरण • बाल नेत्र चिकित्सा
• भैंगापन • आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला
डॉ. विनीत आर्य
डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. राकेश आर्य
डॉ. नितिश खतुरिया
डॉ. गर्व विश्नाई
• शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
• निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

कुचामन में युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला

कुचामन सिटी स्थित श्री हनुमंत राजपूत छात्रावास में 17 फरवरी को संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ का युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यक्रम साधना संगम संस्थान कुचामन के तत्वावधान में रखा गया। कार्यक्रम में भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी राजेन्द्रसिंह आंतरी, राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी महेन्द्रप्रतापसिंह गिराब व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली युवाओं का मार्गदर्शन करने पहुंचे। महेन्द्रप्रतापसिंह ने कहा कि अध्ययन में पहली लड़ाई अपने आप से होती है। स्वयं के संकल्प को कमजोर करने वाली वृत्तियों से लड़ना पड़ता है। अपने नजदीकी मित्रों, रिश्तेदारों से भी दूरी बनानी पड़ती है। आरक्षण, कमजोर आर्थिक स्थिति, कमजोर शैक्षणिक पृष्ठभूमि आदि सभी कारण हमारी संकल्प शक्ति के सम्मुख कमजोर हो जाते हैं यदि हम उस पर दृढ़ रहें तो। इसलिए आवश्यकता है दृढ़तापूर्वक लक्ष्य का पीछा करने की। यशवर्धनसिंह झेरली ने कहा कि लड़ना हमारा स्वभाव है। हमारे पूर्वजों के जीवन के संघर्ष ने ही हमें गौरव प्रदान किया है। इसलिए लड़ना बंद नहीं करें लेकिन जमाने के अनुकूल हथियार होने आवश्यक हैं। यदि हम आज क्षात्र धर्म पालनार्थ मध्यकालीन शस्त्रों का उपयोग करेंगे तो अपराध की श्रेणी में आएगा लेकिन युगानुकूल शस्त्र अपनाएंगे तो धर्म पर आरूढ़ हो जाएंगे। आई.आर.एस. राजेन्द्रसिंह आंतरी ने कहा कि लक्ष्य बड़ा होना चाहिए। बड़े लक्ष्य के लिए प्रयत्न करेंगें तो छोटे लक्ष्य आसानी से हासिल कर सकेंगे। उन्होंने अपनी क्षमताओं को समझ कर उनका सही दिशा में समुचित उपयोग करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि हम लोग सिविल सेवा से जुड़े हैं इसलिए सिविल सेवा के बारे में बता रहे हैं लेकिन आपको अपनी रूचि एवं क्षमता के अनुसार लक्ष्य चुनकर उस ओर पूर्ण क्षमता से प्रयास करने चाहिए। कार्यशाला में हुए संवाद में संभागीयों ने अपने अध्ययन, रोजगार के अवसरों आदि को लेकर विभिन्न प्रश्न पूछे जिनका तीनों ने बारी-बारी से समाधान किया। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एवं उनकी प्रक्रिया के बारे में भी विस्तार से बताया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा, संभाग प्रमुख शिंभुसिंह आसरवा, छात्रावास कार्यकारिणी के अध्यक्ष ओमसिंह लिचाणा सहित अनेक वरिष्ठ लोग भी शामिल हुए। प्रांत प्रमुख नत्थुसिंह छापड़ा, शिवराजसिंह आसरवा आदि ने आयोजन का पूरा जिम्मा संभाला।

महाराष्ट्र सम्भाग के शाखा-शिक्षकों की कार्यशाला सम्पन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के महाराष्ट्र संभाग की शाखाओं के शिक्षकों की एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला केंद्रीय शाखा कार्यालय प्रभारी महेंद्रसिंह गुजरावास की उपस्थिति में ऐरोली (मुम्बई) में संपन्न हुई। इस कार्यशाला में शाखा में जाने से स्वयं को होने वाले लाभ, शाखाओं को प्रभावी बनाने के लिए किए जाने वाले कार्यक्रम जैसे अधिकतम संख्या दिवस, जयन्ती कार्यक्रम, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, संघ सहित्य पर चर्चा, विभिन्न विषय के विशेषज्ञ को बुलाकर उस विषय की जानकारी इत्यादि के बारे में विस्तार से बताया गया। शाखा प्रमुख, शिक्षण प्रमुख और विस्तार प्रमुख के दायित्व को विस्तार से बताया। महाराष्ट्र संभाग के सभी शिक्षण प्रमुखों को दायित्व के रूप में व्हीशल और निर्देशिका दी गयी व शिक्षण आदेशों को विस्तार से समझाया। इस कार्यशाला में मुम्बई, सूरत व पुणे प्रान्त के स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

शहीद उम्मेदसिंह बडोड़ागांव का श्रद्धांजलि कार्यक्रम

प्रतिवर्ष की भांति जैसलमेर के बडोड़ागांव में शहीद उम्मेदसिंह भाटी का श्रद्धांजलि कार्यक्रम संपन्न हुआ। श्रीलंका में ऑपरेशन पवन के दौरान शहीद हुए उम्मेदसिंह ने सात आतंकियों को मारकर अपनी शहादत दी थी। कार्यक्रम को केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, विधायक रूपाराम, पूर्व विधायक सांगसिंह भाटी, पूर्व विधायक छोटूसिंह, पूर्व महारानी राज्यलक्ष्मी देवी, विक्रमसिंह, मेजर दलवीर सिंह, मगसिंह, रूपसिंह पालावत, निरंजन भारती आदि ने संबोधित किया। इस अवसर पर विद्यालय के मुख्य द्वार का लोकार्पण भी किया गया। वक्ताओं ने शहीदों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उनके बलिदान को नमन किया।

आयुवान निकेतन में संभागीय बैठक

नागौर संभाग के संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन कुचामन सिटी में नागौर संभाग के स्वयंसेवकों की संभागीय बैठक 16 फरवरी की शाम रखी गई। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ के सानिध्य में आयोजित इस बैठक में नागौर में चल रहे संघ कार्य की समीक्षा की गई। संभाग प्रमुख शिंभुसिंह आसरवा ने इस सत्र की सांघिक गतिविधियों की जानकारी दी। सभी स्वयंसेवकों ने संघ कार्य में आने वाली बाधाओं एवं उनके निवारण को लेकर चर्चा की। प्रातःकालीन शाखा में केन्द्रीय कार्यकारी ने कहा कि सावधानी ही साधना है। हमें संघ कार्य में ही नहीं बल्कि जीवन व्यवहार की हर गतिविधि में सावधानी रखनी चाहिए। स्वयं का मूल्यांकन नित्य एवं निरन्तर जारी रहना चाहिए। अप्रेल माह में आयुवान निकेतन में एक शिविर आयोजित करने को लेकर चर्चा की गई एवं उ.प्र.शि. की तैयारी बाबत भी बात हुई।

मरुधरा छात्रावास का वार्षिकोत्सव

बाड़मेर की गांधी नगर कॉलोनी स्थित मरुधर छात्रावास का वार्षिकोत्सव 14 फरवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि जिस गति से बाड़मेर अध्ययन, अध्यापन में आगे बढ़ रहा है उससे लगता है कि शीघ्र ही यह राजस्थान में सबसे आगे होगा। अन्य स्थानों पर पढ़ाई के साथ-साथ निराशा, अवसाद बढ़ रहा है लेकिन यहां के लोग जीवट के धनी हैं एवं निराशा को जानते तक नहीं हैं यह प्रेरणादायी है। जीवन के प्रति जुझारु रहकर मेहनत करने वाले लोग इस क्षेत्र में बसते हैं। संघ प्रमुख श्री ने विद्यार्थियों को आत्मानुशासन का महत्त्व बताते हुए कहा कि जो अपने आप पर नियंत्रण नहीं रखेगा वह निश्चित रूप से एक दिन भटक जाएगा। संगठन के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमें लोगों का नहीं बल्कि अपने आपका संगठन करना है। अपने शरीर, मन, बुद्धि आदि का संगठन कर शाश्वत उद्देश्य की ओर बढ़ना है। गीता इसी का मार्ग बताती है।

शिक्षा के साथ संस्कार जरूरी

गुरुकुल ग्रुप ऑफ एजुकेशन की गुरुकुल किड्स एकेडमी खातीपुरा एवं टाट्स वर्ल्ड पब्लिक स्कूल गोकुलपुरा का वार्षिकोत्सव 24 फरवरी को संपन्न हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि शिक्षा के साथ संस्कार जरूरी है और उसके लिए माता-पिता को ही अपने बच्चों का आदर्श बनना पड़ेगा। कार्यक्रम को अनिल शर्मा, कुलदीपसिंह सिरसला, संजय जांगीड़, निर्मला कंवर, चैनसिंह राठौड़ ने भी संबोधित किया। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया एवं पुरस्कार वितरण किया गया।

रग-रग में है रजपूती खून

(पूज्य तनसिंह जी को समर्पित)

रग-रग में है रजपूती खून
दौड़ रहा है इस तन में,
क्षात्रधर्म का पालन करना
ठान लिया है जीवन में।
सूर जन की भी होती इच्छा
क्षात्रधर्म को निभाने की,
रक्षा करते मातृ भूमि की
परवाह नहीं विपदाओं की।
शीश काट थाली में रख दे
उस क्षत्राणी को नमन करूं
घोड़े सहित काट दे दुश्मन
उस महाराणा को नमन करूं।
नमन करूं मैं दुर्गादास को
जो क्षात्रधर्म का पालक था,
नमन करूं मैं वीर शिवा को
जो दुश्मन का भक्षक था।
नमन करूं हर क्षत्राणी को
नमन करूं हर योद्धा को,
राजपूत का मार्ग दिखाया
नमन करूं संघ सृष्टा को।

- चैनसिंह राठौड़, कवाल

अपूर्वी चंदेला को स्वर्ण पदक

निशानेबाजी के आई.एस.एस.एफ. शूटिंग विश्व कप 2019 में 10 मीटर एयर रायफल शूटिंग प्रतियोगिता में राजस्थान की अपूर्वी चंदेला ने स्वर्ण पदक हासिल किया है। अपूर्वी ऐसा करने वाली प्रथम भारतीय महिला है।

कानसिंह वैरावत बलिदान दिवस मनाया

पाली जिले के रानी खुर्द गांव में ग्रामवासियों ने 24 फरवरी को अपने पूर्वज कानसिंह वैरावत का 451वां बलिदान दिवस मनाया। विशनसिंह राठौड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में संयोजक गोविन्दसिंह, छैलसिंह राठौड़ ने कानसिंह वैरावत की शौर्य गाथा का वर्णन करते हुए महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही।

नहीं रहे साहित्यकार डॉ. नामवरसिंह

डॉ. नामवर सिंह सुपुत्र ठाकुर नागरसिंह निवासी जीयनपुर जिला चंदौली-उत्तरप्रदेश का जन्म 28 जुलाई 1926 को हुआ था। वे एक पिछड़े क्षेत्र के अदने से गांव के एक साधारण परिवार के प्रतिभाशाली सदस्य थे। संसाधन की दृष्टि से भले ही उनका परिवार दरिद्र रहा हो परन्तु इस बिरले परिवार का प्रत्येक सदस्य सुसंस्कृत, संस्कारवान और चरित्रिक गुणों से ओतप्रोत था। उनका परिवार पूर्ण रूप से आस्तिक, मर्यादित और अनुशासनशील था। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. और पी.एच.डी. की पदवी प्राप्त की थी और बी.एच.यू. सागर, जोधपुर विश्वविद्यालय और जे.एन.यू. में अध्यापन किया था। सेवानिवृति के उपरान्त आप जे.एन.यू. में भारतीय भाषा केन्द्र के इमेरिट्स प्रोफेसर रहे। हिन्दी के शीर्षस्थ शोधकार, समालोचक, निबंधकार तथा मर्द्धन्य सांस्कृतिक व ऐतिहासिक उपन्यास लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रिय शिष्य थे।

कहानी, नई कहानी, छायावाद, इतिहास और आलोचना, कविता के नए प्रतिमान, दूसरी परम्परा की खोज और वाद विवाद संवाद आपकी प्रमुख रचनाएं हैं। आपने हिन्दी की दो पत्रिकाओं जनयुग और आलोचना का सम्पादन भी किया। डॉ. सिंह अत्यधिक अध्ययनशील तथा विचारक प्रकृति के हिन्दी में अपभ्रंश साहित्य से जुड़े हुए आधुनिक अर्थ में विशुद्ध आलोचना के प्रतिष्ठापक तथा प्रगतिशील आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षर थे। चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा परन्तु असफल रहे।

आपने कभी अपने गुरुदेव से पूछा था- 'सबसे बड़ा दुख क्या है?' गुरुदेव ने कहा 'न समझा जाना।' और सबसे बड़ा सुख? 'ठीक उल्टा! समझा जाना।'

उनका मानना था कि अगर लगे की दुनियां में सभी गलत समझ रहे हैं लेकिन एक भी आदमी ऐसा है जिसके बारे में तुम आश्वस्त हो कि वह तुम्हे समझता है तो फिर उसके बाद किसी और चीज की कमी नहीं रह जाती।

इस विराट प्रतिभा का 19 फरवरी 2019 को रात्रि में नई दिल्ली स्थित एम्स में निधन हो गया। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। वे सही मायने में नामवर आलोचक थे।

उन्हें निम्नलिखि सम्मान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है :

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार।
2. शलाका सम्मान हिन्दी अकादमी (दिल्ली की ओर से)।
3. साहित्य भूषण सम्मान (यूपी हिन्दी संस्था)
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान-2010.
5. शब्द साधक शिखर सम्मान-2016.

(पृष्ठ एक का शेष)

वंचित को..

हमारी संस्कृति में हम भाई से गले मिलते थे लेकिन उनके प्रभाव से दूर से दुआ सलाम होने लगी और कालांतर में वेटिंग रूम बन गए। हम अपनों से व अपनी संस्कृति से दूर होते गए लेकिन इतने बिगाड़ के बावजूद अभी भी बहुत कुछ शेष है, हमें उसको बचाना है और भूले हुए संस्कारों को भी जागृत करना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही काम कर रहा है।

जोधपुर जिले में शेरगढ़ क्षेत्र के बावकान तालाब स्थित राव देवराज स्मारक पर 21 फरवरी को आयोजित देवराज जी जयंती समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। 657वीं जयंती के अवसर पर आयोजित इस समारोह को संबोधित करते हुए संत रामविचार जी ने कहा कि युग के प्रभाव को रोकने की क्षमता क्षत्रिय में ही है। इतिहास क्षत्रियों ने या इनसे प्रभावित लोगों ने ही बनाया है। बोलने और लिखने लायक समाज ही यही है, ऐसे समाज में जन्म मिलना अपने आप में तकदीर की बात है। आपको इस सौभाग्य को समझना चाहिए। केन्द्रीय कृषि एवं कृषक कल्याण राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि हमें बाबर, सिकंदर, अकबर आदि की जयंती के समाचार पढ़ने को नहीं मिलते जबकि हमारे महापुरुषों की जयंतियां सब लोग मनाते हैं क्योंकि उनका संघर्ष व्यक्तिगत नहीं बल्कि सैद्धांतिक था। हम हमारे इतिहास पर गौरव करते हैं एवं प्रेरणा लेते हैं जबकि अन्यों के पास ऐसा प्रेरणा स्रोत नहीं है। ऐसा प्रेरणादायी समाज किसी के साथ अपमान जनक व्यवहार करे यह कल्पनातीत है। इसीलिए सोशल मीडिया में हमारे युवाओं को खेदजनक व्यवहार से बचना चाहिए। उन्होंने कहा कि आदमी का नाम या काम याद नहीं रहता बल्कि उसका व्यवहार याद रहता है इसलिए लोगों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए। उन्होंने निरन्तर क्रियाशील रहते हुए आगे बढ़ने की बात कही क्योंकि रुका हुआ तो पानी भी दूषित हो जाता है। शेरगढ़ विधायक मीना कंवर ने सभी समाज बंधुओं का उनके चुनाव में सहयोग देने के लिए आभार जताया एवं सोशल मीडिया पर जातिवाद व धर्मांधता बढ़ाने वाले संदेशों से परहेज रखने की सीख दी। पूर्व विधायक बाबूसिंह राठौड़ ने कहा कि ऐसे अवसर युवा पीढ़ी को इतिहास की जानकारी प्राप्त करने को प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा कि हर राजपूत को आगे बढ़ने में सहयोग करना चाहिए क्योंकि राजपूत जहां भी बैठेगा, देशहित व न्याय की ही बात करेगा। समारोह को प्रदेश कांग्रेस महासचिव सुनिता भाटी, कांग्रेस प्रदेश सचिव उम्मेदसिंह राठौड़, मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा ने भी संबोधित किया। समारोह में राजनीतिक प्रतिभाओं के रूप में विधायक मीना कंवर, के.एन. कॉलेज छात्रसंघ अध्यक्ष गुड्डी कंवर, नवनिर्वाचित सरपंच गोपालसिंह, पूनम कंवर भाटी को सम्मानित किया गया। इनके अलावा 10वीं व 12वीं में उत्कृष्ट परिणाम देने वाले विद्यार्थियों, खेल प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। समारोह के अंत में देवराज हितकारिणी सभा के अध्यक्ष कल्याणसिंह राठौड़ ने सभी का आभार जताया। संचालन मदनसिंह सोलंकियातला ने किया। इस वर्ष इस समारोह की पूरी व्यवस्था डेढ़ा गांव के देवराज राठौड़ों ने की।

दलित आदिवासी...

दलित एवं आदिवासी समाज के प्रतिनिधियों ने उनके साथ किए जाने वाले असम्मानजक व्यवहार के बारे में बात की साथ ही यह पीड़ा भी व्यक्त की कि एक क्षेत्र विशेष में किए गए अध्ययन के अनुसार केवल 8 प्रतिशत एक्ट्रोसिटी के मुकदमे राजपूत समाज के खिलाफ होते हैं जबकि राजपूत इस कानून का विरोध इस तरह कर रहे थे जैसे यह उनका ही मुद्दा हो। राज्य में विरोध का झण्डा उठाने में शत-प्रतिशत भूमिका निभा रहे थे। साथ ही उन्होंने कहा कि हम आपस में जीतने या पराजित करने के भाव से नहीं बल्कि साथ चलने के भाव से बैठें। वक्ताओं ने कहा कि मुख्य संघर्ष संसाधनों पर कब्जा करने का संघर्ष है लेकिन हम छोटे-छोटे झगड़ों में उलझे रहते हैं और निहित स्वार्थी तत्व संसाधनों को हथिया रहे हैं। व्यक्ति की गलती को समाज की गलती मानकर प्रचारित नहीं किया जाए क्योंकि अपराधों का रूप कुछ और होता है और उसे रूप कुछ और दे दिया जाता है। एक-दूसरे के स्वाभिमान को हनन करने का प्रयास न करें क्योंकि स्वाभिमान के बिना साथ बैठकर भी कुछ हासिल नहीं होगा। व्यवस्थाएं बदलती रहती हैं, वर्तमान में जो व्यवस्था है, उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार नारायण बारहठ ने कहा कि हिन्दुस्तान विरोधाभासों का देश है। हम जो देख रहे हैं वह वैसा ही हो यह आवश्यक नहीं है। उन्होंने कहा कि शस्त्र को नहीं शास्त्र को बांटा जाता है लेकिन आजकल शस्त्र बंट रहे हैं इसीलिए विकृतियां बढ़ रही हैं। अच्छे लोगों को यदि हम आगे लाने का प्रयास नहीं करेंगे तो बूरे लोग हमारा नेतृत्व करेंगे। मार्टिन लूथर किंग ने कहा कि मैं संसार भर में घूमने जाता हूं लेकिन भारत में तीर्थ करने जाता हूं। हमें भी हमारे इस महान देश को इसी दृष्टिकोण से देखना चाहिए। बीस वर्षों से अनेक लोगों से कहा कि ऐसा प्रयास होना चाहिए लेकिन आज हुआ यह सुखद पहल है। अंत में आशीर्वाद स्वरूप माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि मैं आप सब लोगों के बीच रहता हूं, जो आप लोग देखते हैं वह मैं भी देखता हूं। महापुरुषों से सुना है कि भगवान नाम की सत्ता सबके हृदय में है, उसकी ओर बढ़ना ही विकास है। आप लोगों ने छत्र-छाया की बात कही तो छाया सबके लिए होती है लेकिन छाया तब तक मिलेगी जब पेड़ हरा रहेगा। जो श्रेष्ठ कार्य करता है वही श्रेष्ठ है और वहीं ज्येष्ठ है। हमें उनकी जय जयकार नहीं बल्कि अनुकरण करना चाहिए। ऐसा करेंगे तो सब आसूरी वृत्तियां शांत होंगी जो हर व्यक्ति, जाति में है, कण कण में है। इसलिए श्रेष्ठता देखें और उसका अनुसरण करें। अंत में एक साझा संवाद पत्र जारी किया गया जिस पर काम करने का संकल्प लिया गया। बैठक का संचालन राजेन्द्रसिंह भियाड़ ने किया।

नवनिर्मित छात्रावास भवन का लोकार्पण

श्री राजपूत सभा जयपुर द्वारा नवनिर्मित छात्रावास भवन का 24 फरवरी को जोधपुर के पूर्व महाराजा गजसिंह एवं नांद (अजमेर) के संत समतारामजी के आतिथ्य में लोकार्पण किया गया। जयपुर की जगतपुरा महल योजनान्तर्गत जेडीए से 6002 वर्ग गज (दो बीघा) भूमि क्रय कर बनाए इस छात्रावास में 75 कमरे व दो बड़े हॉल बनाए गए हैं। सभी कमरों में अटैच बाथरूम बनाए गए हैं। छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास के अलावा यहां डिफेंस एकेडमी, स्पोर्टस एकेडमी व शिक्षण प्रशिक्षण की बहुआयामी योजनाओं को कार्य रूप देना प्रस्तावित है। समारोह को पूर्व महाराजा गजसिंह, संत समताराम जी, राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा व मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा ने संबोधित किया। वक्ताओं ने राजपूत सभा जयपुर के इस प्रयास की प्रशंसा की एवं अनुकरणीय बताया।

स्प्रिंग बोर्ड एकेडमी ने दिए 21 लाख

संघ के स्वयंसेवक दिलीपसिंह बुडीवाड़ा द्वारा संचालित स्प्रिंग बोर्ड एकेडमी द्वारा मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को शहीदों के परिवारों की सहायतार्थ प्रस्तावित फंड हेतु 21 लाख रुपए का चैक भेंटकर फंड संग्रहण की शुरुआत की गई। संचालक दिलीपसिंह के निर्देश पर एकेडमी के निदेशक संदीप मील, राजवीर सिंह व विजयसिंह ने वरिष्ठ पत्रकार श्रीपाल शक्तावत, कांग्रेस नेता धर्मेन्द्रसिंह राठौड़ आदि की उपस्थिति में यह चैक मुख्यमंत्री को सुपुर्द किया।

सीकर में जिला स्तरीय बैठक संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जिला स्तरीय बैठकों के क्रम में प्रथम बैठक सीकर जिले में सीकर के निकट स्थित एक फार्म हाऊस पर 17 फरवरी को संपन्न हुई। 16 फरवरी की शाम प्रारम्भ हुई इस बैठक में जिले की विभिन्न तहसीलों से आमंत्रित समाज बंधु पहुंचे।

बैठक के प्रारम्भ में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थापना की भूमिका को विस्तार से बताया गया। संयोजक यशवर्धनसिंह ने फाउंडेशन के उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं एक-एक उद्देश्य की महत्ता व आवश्यकता को बताया। उन्होंने कहा कि हम संघ से समाज के जिन कामों को करने की अपेक्षा यदा कदा करते रहते हैं, संघ ने उन सभी कामों को करने का दायित्व अब हम सब को दिया है, हमें संघ का मार्गदर्शन लेकर इन उद्देश्यों के लिए काम करना है। सह संयोजक आजादसिंह ने फाउंडेशन की कार्य प्रणाली, संगठनात्मक स्वरूप एवं संघ से इसकी संबद्धता पर अपनी बात कही। भोजनोपरांत हुए दूसरे सत्र में अनौपचारिक चर्चा का आयोजन किया जिसमें संभागीयों ने अपने सुझाव प्रस्तुत किए। सीकर जिले में काम को आगे बढ़ाने के लिए 10 बंधुओं की कोर टीम गठित करने का निर्णय लिया गया। सीकर शहर में प्रतिमाह सकारात्मक सोच वाले बंधुओं की बैठक कर फाउंडेशन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करने का निर्णय लिया गया। आगामी सितंबर माह तक लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, नीमकाथाना, दांतारामगढ़, खंडेला, श्रीमाधोपुर आदि तहसीलों में तहसील स्तरीय बैठक करने का भी निर्णय लिया गया। 16 को रात्रि विश्राम बैठक स्थल पर ही करने के उपरांत 17 को प्रातः संघ की शाखा लगाई गई। बैठक में भोजन, विश्राम आदि का प्रबंध फार्म हाऊस के संचालक शेरसिंह खोरी ने अन्य बंधुओं के सहयोग से किया। बैठक के उपरान्त सीकर की कोर टीम घोषित की गई जिसमें अजीतसिंह नृसिंहपुरी, विक्रमसिंह वाहिदपुरा, राजेन्द्रसिंह पलसाना, सुरेन्द्रसिंह तंवरा, मूलसिंह बरसिंगपुरा, हिम्मतसिंह बेरी, रणवीरसिंह राजपुरा, रतनसिंह छिंछास, भागीरथ सिंह महरोली, सर्वेश्वरसिंह सुरपुरा को दायित्व सौंपा गया।

भीलवाड़ा में रक्तदान

851 यूनिट रक्त संग्रहित

प्रताप युवा शक्ति भीलवाड़ा द्वारा स्व. पुष्पेन्द्रसिंह खैराबाद की स्मृति में 17 फरवरी को महाराणा कुंभा विद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कुल 851 यूनिट रक्त का संग्रहण रामस्नेही चिकित्सालय, महात्मा गांधी चिकित्सालय, अरिहंत चिकित्सालय (सभी भीलवाड़ा), संतोक बा दुर्लभजी चिकित्सालय (जयपुर) व गीतांजलि चिकित्सालय (उदयपुर) की टीमों ने किया। प्रातः 10 बजे से सायं 6 बजे तक चले रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करने हेतु सुभाष बहेड़िया (सांसद), विट्ठल शंकर अवस्थी (विधायक), शक्तिसिंह हाड़ा (जिला प्रमुख), प्रदीप कुमार सिंह (पूर्व विधायक), हेमेन्द्रसिंह, पराक्रमसिंह बनेड़ा, राजेन्द्रसिंह खोमार, दिलीपसिंह बड़लियास (अध्यक्ष कुंभा ट्रस्ट) आदि शिविर में पधारे। संत श्री खड़ेश्वरी जी व महंत बलराम जी का भी सानिध्य मिला। जिलाध्यक्ष नागेन्द्रसिंह जामोली, रणजीतसिंह झालरा, कानसिंह खारड़ा, मानसिंह मंगरोप, शशांकसिंह, भरतसिंह पड़ासोली आदि सहित प्रताप युवा शक्ति की जिला इकाई ने इस आयोजन की व्यवस्था संभाली।

राजगढ रैणी में प्रतिभा सम्मान

राजपूत सभा राजगढ़ रैणी (अलवर) द्वारा अपना छठा प्रतिभा सम्मान समारोह 24 फरवरी को रखा गया जिसमें पूर्व केन्द्रीय मंत्री भंवर जितेन्द्रसिंह, विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा, अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक गजेन्द्रसिंह जोधा, राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी जितेन्द्रसिंह नरुका, नगर विकास न्यास के पूर्व अध्यक्ष देवीसिंह शेखावत आदि अतिथि के रूप में शामिल हुए। समारोह में 213 प्रतिभावान छात्र-छात्राओं, सरकारी सेवाओं में चयनित समाज बंधुओं एवं खेलकूद में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। दो छात्राओं को पदमावती पुरस्कार दिया गया। अतिथियों ने शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता जताई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org